8

भाषा के विकास में कठपुतली के खेलों का महत्त्व

पूनम*

भाषा मनुष्य के भावों और विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है। व्यापक अर्थ में हम किसी भी प्रकार से भाव और विचार को व्यक्त करने की प्रणाली को भाषा कहते हैं। अर्थात् भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त ध्वनि समूहों के संयोजन को ही भाषा कहते हैं।

कठपुतलियाँ भाषा कौशलों, सुनना, बोलना, लिखना एवं पढ़ना के लिए एक मूल्यवान साधन हैं जो कि भीड़ में सभी के सामने बोलने का आत्मविश्वास प्रदान करती हैं। इसलिए पुरातन से लेकर वर्तमान तक कठपुतली अभिनय को शिक्षण का सबसे उत्तम एवं महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है। लेखिका स्वयं एक नर्सरी अध्यापिका है जिसने यह स्वयं अनुभव किया है कि कठपुतली के खेल में बच्चों को आनंद की प्राप्ति होती है। जो पाठ सीखने में बच्चों को घंटों लग जाते हैं वह कठपुतली के माध्यम से मिनटों में सीख जाते हैं। क्योंकि अभिनय से बच्चों का मनोरंजन होता है। साथ ही वे इतने जिज्ञासित होते हैं कि बार-बार प्रश्न पूछते हैं जोकि मौखिक कौशल के विकास में सहायक सिद्ध होता है। कठपुतलियों के माध्यम से कहानी व कविता सुनने में बच्चों की रुचि इतनी अधिक होती है कि वह आसानी से गीतों को कंठस्थ कर लेते हैं। इस प्रकार से बच्चों के शब्द भंडार में भी वृद्धि होती है। यहाँ तक कि यह भी देखा गया है कि कठपुतली प्रयोग द्वारा बच्चों में अपने स्वयं के विचारों को व्यक्त करने की योग्यता उत्पन्न होती है। बच्चों में इतना आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता है कि वह कहीं भी कभी भी व किसी के भी सामने स्वत्रंत रूप से अपने विचार व्यक्त करने लगते हैं।

कठपुतली खेल एक प्रकार के नाटक हैं जिसमें कठपुतलियों का प्रयोग करके उन्हें किसी वस्तु, जानवर या इंसान का रूप दिया जाता है और एक सार्थक संदेश या मनोरंजन के लिए उपयोग में लाया जाता है। इस कला को ही कठपुतली खेल का नाम दिया जाता है। कठपुतलियाँ कई प्रकार की होती है, जैसे – अँगुली, छड़, धागा कठपुतली आदि। कठपुतली खेल में हाथ, बाजू या धागों का प्रयोग कर कठपुतलियों को चलाया या घुमाया जाता है तथा उनकी दिशा एवं हाव-भाव सुनिश्चित किए जाते हैं। जिसके कारण कठपुतलियों के पूर्ण शरीर के विभिन्न अंग, जैसे – हाथ, मुँह, सिर आदि बोलते एवं बात करते हुए प्रतीत होते हैं। कठपुतली खेल में पूर्णत: चरित्र के अनुरूप वाक्यों को बोला जाता है जिसमें उसके हाव-भाव एवं संकेत सम्मिलित होते हैं और सार्थक संदेश को बहुत ही आसानी से एक समूह या बच्चों को पहुँचाया जा सकता है।

* *शिक्षिका,* आई.आई.टी., नर्सरी स्कूल, हौज़खास, नयी दिल्ली

भाषा सीखने का स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक क्रम होता है – सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। बालक में भाषा सीखने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। भाषा का विकास मूलत: जीवन की प्रारंभिक अवस्था से ही आरंभ हो जाता है जो मूलत: अनुकरण एवं अभ्यास द्वारा अर्जित की जाती है। मुख्यत: भाषा विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बच्चा किसी भी परिस्थिति को समझकर संप्रेषण करता है। इसलिए भाषा का अपना महत्त्व है। बच्चे भाषा मुख्यत: निम्न प्रकार से सीखते हैं–

- अपने आस-पास के लोगों की नकल करके।
- अपने आस-पास के लोगों का प्रोत्साहन पाकर।
- विचारों और भावनाओं को सुनकर तथा उनकी अभिव्यक्ति करके।

भाषा का दिनचर्या में एक विशेष महत्त्व है जिसके माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान बहुत ही सरलता से किया जा सकता है। भाषा संपर्क, अनुकरण और अभ्यास द्वारा अर्जित की जाती है और इसका अपना एक महत्त्व होता है –

इच्छाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि

भाषा बच्चों को अपनी आवश्यकता, इच्छा व मनोभाव दूसरों के समक्ष व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है। अन्य व्यक्ति सरलता से उनकी आवश्यकताओं को समझकर समाधान प्रदान करता है।

ध्यान आकर्षित करने के लिए

मुख्यत: सभी बच्चे चाहते हैं कि लोग उनकी ओर ध्यान दें इसलिए वह अभिभावकों से प्रश्न पूछकर या कोई समस्या प्रस्तुत करके ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। इस प्रकार भाषा के माध्यम से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है।

विचार-विनिमय के सरलतम एवं सर्वोत्तम साधन के रूप में

भाषा विचार-विमर्श करने का सबसे सरलतम एवं सुगम साधन है। बालक जन्म के कुछ समय पश्चात् परिवार में रहकर भाषा सीखने लगता है जो कि उसके एवं उसके परिवार के बीच समन्वय स्थापित करती है। भाषा के कारण ही बच्चा अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से प्रकट कर पाता है।

भाषा शिक्षण की बहुत-सी प्रचलित विधियाँ हैं जिसमें कठपुतली का खेल अपना विशेष स्थान रखता है। इसमें अँगुली में पहनी जाने वाली, दस्तानों वाली और छड़ कठपुतलियाँ मुख्य हैं। कठपुतली का जादुई संसार बड़ा ही रंग-रंगीला है। इनकी सहायता से निरक्षर व्यक्ति भी श्रवण के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। चूँकि कठपुतली का खेल सदियों पुराना है। परंतु यह आज भी सभी संस्कृतियों में अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। कठपुतली का खेल एक प्रकार का नाटक होता है। इसमें बहुत-सी कठपुतलियों को हाव-भाव एवं शब्द दिए जाते हैं जिसके माध्यम से समाज को संदेश दिया जा सकता है। कठपुतलियों का प्रयोग समाज में मनोरंजन एवं परंपराओं जैसे, त्योहार मनाना आदि के लिए किया जाता है परंतु सबसे अधिक कठपुतलियों का प्रयोग कहानी सुनाने के लिए किया जाता है।

कठपुतली के खेलों का प्रभाव मुख्यत: उसके सही इस्तेमाल पर निर्भर करता है। कठपुतली का खेल शिक्षण को मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी बना सकता है क्योंकि यह बच्चों व बड़ों दोनों को ही अपनी ओर आकर्षित करता है। बच्चे इन कठपुतलियों की कहानियों को अपनी कहानी से जोड़ते हैं और उनमें मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। कठपुतली के सही प्रयोग द्वारा हम

कविता, कहानी, पहेली, नैतिक मूल्यों, देश व मानव प्रेम जैसी भावनाओं को प्रभावशाली व स्मरणीय बना सकते हैं। इस प्रकार से शिक्षण में कठपुतलियों का प्रयोग एक अहम स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त कुछ और भी ऐसे महत्त्व हैं जो विकास चक्र में सहायक सिद्ध होते हैं, जैसे–

कल्पना शक्ति को प्रोत्साहित करना

कठपुतली के खेलों द्वारा बच्चों की कल्पना शक्ति का सृजनात्मक विकास होता है। जीन पियाजे के अनुसार कठपुतली के इस्तेमाल द्वारा बच्चे अपनी कल्पनाओं से अपनी कठपुतलियों को नाम देते हैं, उनसे बातें करते हैं तथा उनके लिए कहानी तैयार करते हैं। इससे उनके छिपे हुए भाव अभिव्यक्त होते हैं और यह सभी क्रियाएँ बच्चों के मानसिक विकास में मददगार सिद्ध होती हैं। साथ ही बच्चे अपनी काल्पनिक दुनिया व वास्तविकता से परिचित हो पाते हैं।

संवेगात्मक विकास

कुछ बच्चे स्वभाव से शर्मीले होते हैं तो कुछ दूसरों से अलग रहना पसंद करते हैं। ऐसे बच्चों के लिए कठपुतली "दोस्त" का काम करती हैं तथा उनके संप्रेषण में आने वाली बाधाएँ दूर होती हैं। बच्चा उन पर विश्वास करता है तथा नि:संकोच होकर अपने भावों को अभिव्यक्त करता है और उनमें आत्मविश्वास पैदा होता है।

माँसपेशियों का विकास

कठपुतली को चलाने के लिए माँसपेशियों के समन्वय की आवश्यकता होती है। कठपुतली चाहे हाथ की हो या अँगुली की, उसके लिए माँसपेशियों का समन्वय आवश्यक है, जैसे – कठपुतली को उठाना, पकड़ना, पहनना आदि। कठपुतली को अँगुली में पहनकर जब बच्चा चलाता है तो उससे बच्चे की सूक्ष्म माँसपेशियाँ विकसित होती हैं और उसे आनंद की प्राप्ति होती है।

बोलने व सुनने के कौशल का विकास

कुछ बच्चे अकसर अपने सहपाठियों व अभिभावकों के सामने बोलना पसंद नहीं करते हैं। यदि अभिभावक व शिक्षक शिक्षण के लिए कठपुतली की कहानियों को बच्चों की दिनचर्या की कहानी से जोड़ते हैं तो बच्चों का अधिगम और भी प्रभावी हो जाता है तथा बच्चे कठपुतली की बातों एवं वाक्यों को और भी रुचिपूर्वक सुनते हैं। उनके बोलने एवं सुनने के कौशल में वृद्धि होती है। कठपुतली नाचना, गाना, गुनगुनाना, रोना, हँसना आदि सभी संवेगों को प्रस्तुत करती है और बच्चे उनकी बातें ध्यान से सुनते हैं जो सुनने के कौशल को विकसित करता है और उनके शब्द भंडार में वृद्धि करता है। इसके अतिरिक्त जब बच्चा इन कठपुतलियों का प्रयोग कर अपने विचार प्रस्तुत करता है तो उसके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

समस्या समाधान में सहायक

कठपुतली खेल के माध्यम से बच्चों की समस्याओं का समाधान भी किया जा सकता है। बच्चों का गुस्से पर काबू न पाना, दूसरों के प्रति नम्र न होना, दूसरों की मदद न करना आदि समस्याओं को शिक्षक व अभिभावक कठपुतली के खेल द्वारा बहुत ही आसानी से सुलझा पाते हैं क्योंकि बच्चे दूसरों से अधिक कठपुतली की बातों को ध्यान से सुनते हैं और उन पर विश्वास भी करते हैं।

समूह में सहभागिता

कठपुतली के खेल में बच्चे एक समूह में कार्य करते हैं और एक-दूसरे को बराबर सहभागी बनाते हैं। सभी इसमें मिल-जुलकर कार्य करते हैं और समूह में कार्य करने को भी प्रेरित होते हैं।

कठपुतली खेल के लिए ध्यान रखने योग्य बातें

- कहानियों का चुनाव बच्चों की आयु और रुचि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए, जैसे– बच्चे जानवरों की कहानियाँ सुनना अधिक पसंद करते हैं।
- अभिनय में किसी भी प्रकार की कठपुतली का प्रयोग किया जा सकता है, जैसे–अँगुलियों, दस्तानों वाली या छड़पुतलियाँ आदि। यह आवश्यक नहीं है कि कठपुतलियाँ अधिक महँगी हों।
- कहानियाँ बहुत अधिक विस्तृत एवं लंबी नहीं होनी चाहिए क्योंकि बच्चों का ध्यान केंद्रण अधिक नहीं होता। वह एक स्थान पर अधिक समय तक बैठकर कहानी नहीं सुन सकते हैं।
- कहानी की भाषा स्पष्ट और सरल होनी चाहिए। उसमें इस्तेमाल होने वाले शब्द बच्चों की दिनचर्या से संबंधित होने चाहिए, जैस – "पानी" शब्द के स्थान पर "जल" का प्रयोग।
- कठपुतली प्रदर्शन से पहले शिक्षकों को कहानी भली-भाँति समझ लेनी चाहिए एवं संचालन से पहले उसका अभ्यास भी कर लेना चाहिए।
- बच्चों के बैठने की व्यवस्था उपयुक्त होनी चाहिए। शिक्षिका को सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा ध्यानपूर्वक अभिनय देख और सुन सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि कठपुतली का प्रदर्शन बहुत दूरी पर और बहुत ऊँचाई पर ना हो।
- कठपुतली का अभिनय बच्चों की आँखों के स्तर के अनुरूप होना चाहिए ताकि बच्चे उसे आसानी से देख सकें।
- कठपुतलियों का आकार बड़ा होना चाहिए ताकि सभी बच्चे उन्हें आसानी से देख सकें।
- कठपुतलियाँ रंग-बिरंगी होनी चाहिए, क्योंकि रंग-बिरंगी चीज़ें बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।
- अभिनय के दौरान शब्दों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए अन्यथा बच्चों का उच्चारण भी अस्पष्ट होगा।
- कठपुतली अभिनय के लिए विद्यालय में कठपुतली स्टैंड होना चाहिए। यदि स्टैंड उपलब्ध न हो तो परदे को दोनों ओर से बाँधकर अभिनय किया जा सकता है।
- अभिनय के बाद बच्चों से प्रश्न पूछने चाहिए। इससे पता चलता है कि बच्चों ने कहानी ध्यानपूर्वक सुनी है या नहीं।
- सप्ताह में एक बार कठपुतली का अभिनय अवश्य करवाना चाहिए। इससे बच्चों में विद्यालय के प्रति लगाव उत्पन्न होता है और वह विद्यालय आने को प्रेरित होते हैं।

- कठपुतलियों की बनावट स्पष्ट और सुंदर होनी चाहिए जिससे बच्चे उनकी ओर आकर्षित हों और उनको आसानी से पहचान सकें।

निष्कर्ष

भाषा हमारे चिंतन-मनन व ज्ञान का आधार है। क्योंकि भाषा विचारों के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा की महत्ता जानने से उसके शिक्षण की आवश्यकता का ज्ञान हो जाता है। मानव विकास में भाषा का सर्वाधिक योगदान है। भाषा का असली रूप वही है जिसे एक मानव समुदाय बोलता और सुनता है। मनुष्य संप्रेषण के लिए सबसे अधिक जिस माध्यम का सहारा लेता है, वह है भाषा। भाषा के द्वारा बोलकर या लिखकर अपने मन के भाव या विचार दूसरों तक पहुँचाए और ग्रहण किए जा सकते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कठपुतली का खेल भी शिक्षण एवं भाषा विकास का एक अभिन्न अंग है जिसके द्वारा बच्चों को सुनने, बोलने, लिखने तथा पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है जो आगे जाकर भावी जीवन का आधार बनते हैं।